

---

Namaste He Durge

नमस्ते हे दुर्गे

Document Information

---

Text title : Namaste He Durge

File name : namastehedurge.itx

Category : devii, sanskritgeet, aShTaka, durgA, hkmeher

Location : doc\_devii

Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com

Transliterated by : Harekrishna Meher

Proofread by : Harekrishna Meher

Description/comments : Stavarchana-Stavakam (Sanskrit Stotra-Kavya)

Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher

Latest update : October 16, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

Namaste He Durge

## नमस्ते हे दुर्गे



नमस्ते हे स्वस्तिप्रद-वरद-हस्ते ! सुहसिते !  
महासिंहासीने ! दर-दुरित-संहारण-रते ! ।  
सुमार्गे मां दुर्गे ! जननि ! तव भर्गान्वित-कृपा  
दहन्ती दुश्चिन्तां दिशतु विलसन्ती प्रतिदिशम् ॥ १ ॥

अनन्या गौरी त्वं हिमगिरि-सुकन्या सुमहिता  
पराम्बा हेरम्बाकलित-मुखबिम्बा मधुमती ।  
स्वभावै-र्भव्या त्वं मुनि-मनुज-सेव्या जनहिता  
ममान्तः-सन्तापं हृदयगत-पापं हर शिवे ! ॥ २ ॥

अपर्णा त्वं स्वर्णाधिक-मधुर-वर्णा सुनयना  
सुहास्या सल्लास्या भुवन-समुपास्या सुलपना ।  
जगद्धात्री पात्री प्रगति-शुभदात्री भगवती  
प्रदेहि त्वं हार्दं परम-समुदारं प्रियकरम् ॥ ३ ॥

धरा दुष्टै-भ्रष्टैः परधन-सुपुष्टैः कवलिता  
दुराचार-द्वारा खिल-खल-बलोद्वेग-दलिता ।  
महाकाली त्वं वै कलुष-कषणानां प्रशमनी  
महेशानी हन्त्री महिष-दनुजानां विजयिनी ॥ ४ ॥

इदानीं मेदिन्या हृदयमतिदीनं प्रतिदिनं  
विपद्-ग्रस्तं त्रस्तं निगदति समस्तं जनपदम् ।  
महाशङ्कातङ्कै-र्व्यथित-पृथिवीयं प्रमथिता  
नराणामार्त्तिं ते हरतु रणमूर्त्तिः शरणदा ॥ ५ ॥

समग्रे संसारे प्रसरतु तवोग्रं गुरुतरं  
स्वरूपं संहर्तुं दनुज-कुल-जातं कलिमलम् ।  
पुनः सौम्या रम्या निहित-ममता-स्नेह-सुतनु-  
र्मनोव्योम्नि व्याप्ता जनयतु जनानां हृदि मुदम् ॥ ६ ॥

अनिन्द्या त्वं वन्द्या जगद्दुरसि वृन्दारकगणैः  
प्रशान्ते मे स्वान्ते विकशतु नितान्तं तव कथा ।  
दया-दृष्टि-दैया सकल-मनसां शोक-हरणी  
सदुक्त्या मे भक्त्या तव चरण-पद्मे प्रणतयः ॥ ७ ॥  
भवेद् गुर्वी चार्वी चिरदिवसमुर्वी गतभया  
सदन्ना सम्पन्ना सरस-सरणी ते करुणया ।  
समुत्साहं हासं प्रिय-दशहरा-पर्व-सहितं  
सपर्या ते पर्यावरण-कृतकार्या वितनुताम् ॥ ८ ॥  
- रचयिता : डॉ हरेकृष्ण-मेहेरः

Copyright Dr.Harekrishna Meher

---



*Namaste He Durge*

pdf was typeset on October 16, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

